बाबा तो समझाते हैं कि बाहर वाले तो बंदर बुद्धि हैं। इतनी–2 शिवजयन्ती की प्रदर्शनी किए, फलाना किए तो भी बंदर बुद्धि मनुष्य ये समझते ही नहीं हैं कि 38 शिवजयन्ती क्यों मनाते हैं। है कौन ये शिव? लिखते भी हैं परमात्मा ; परन्तु आते हैं, सुनते हैं, लिट्रेचर लेते हैं; परन्तु जैसे शास्त्रों में भी गाया हुआ है कि बंदर कुछ समझते नहीं हैं इन रत्नों को। ये रत्न हैं ना छपे हुए। एक तो वो भी नहीं समझते हैं। .. जो घर के बच्चे हैं वो भी इतना पूरा नहीं समझते हैं कि किसकी सर्विस में हैं। ब्रिटिश गवर्मेन्ट की सर्विस थी ना, तो भी सर्वेन्ट को बहुत डर था। बड़े खबरदार थे, फुर्ती से काम करते थे। ये तो बहुत बड़ी गवर्मेन्ट है। बड़ा ऊँचा पद मिलता है। तो भी पुरुषार्थ ऐसे करते हैं जैसे कि कोई थर्डक्लास गवर्मेन्ट हो ना। ऐसा समझते हैं; क्योंकि पहले से ही बुद्धि थर्ड क्लास हो पड़ी है ना। तो इतना ऊँचा ... उठा ही नहीं सकते हैं। .....या कोई बड़ी चार/आठ/दस मार हो ना, ऊपर से उतर के देखेंगे ना, तो पैर आ करके ढकेगा। वैसे ही ये जो बड़ी ऊँची मंजिल है ...पैर धड़कने लग पड़ते हैं एकदम। कई–2 तो गिर भी पड़ते हैं। देखते हैं ना। तो है भी बड़ा सहज और बहुत डिफिकल्ट लगता है और समझानी भी बड़ी ठीक है एकदम। फिर इसलिए समझाते हैं कि अच्छा, ड्रामा अनुसार शायद आगे भी ऐसे ही सर्विस चली होगी। ऐसे ही कोई चढ़ते होंगे, कोई गिरते होंगे। लिखना तो है ना– चढ़ना भी होता है, गिरना भी होता है। तो गिरना भी अच्छा ही होता है। वण्डरफुल है। फिर भी कहा जाता है कल्प पहले भी ऐसे हुआ होगा, और तो कुछ भी नहीं कर सकते हैं। ..... उसके लिए कुछ भी दुःख नहीं होता है। विचार नहीं होता है, अफसोस नहीं होता है। समझते हैं बाप को बंदर से देवता बनाने हैं। मेहनत है। जैसे–2 ये तमोप्रधान कलहयुग में ..पूरे बंदर बने हैं ना। तो इनको इतना ऊँच पद ...। बड़ी फिराती आती है बच्चों को। घड़ी–2 भूल भी जाते हैं। इस रूहानी सर्विस बिगर तो वेस्ट ऑफ टाइम है, वेस्ट ऑफ एनर्जी है सारी। पहला भूत देहअभिमान बड़ा दुश्मन है। उसके सेकण्ड में है ये काम रूपी दुश्मन। नहीं तो पहले–2 दुश्मन कड़े ते कड़ा...। भले कहावत है कि काम शत्रु है; परन्तु पहले–2 तो शत्रु देहअभिमान है। इस देहअभिमान के कारण बहुतों का टाइम बहुत वेस्ट होता है, टाइम बरबाद होता है। (म्युज़िक बजा) मीठे–2 सर्विसेबुल बच्चों प्रति यादप्यार और गुडनाइट।